Vol. 9, Issue: 4, April: 2020
ISSN: (P) 2347-5412 ISSN: (O) 2320-091X

उन्नाव जिले के विज्ञान एवं वाणिज्य वर्ग के उच्च माध्यमिक स्तर के छात्रों/छात्राओं की राजनैतिक रूचियों का तुलनात्मक अध्ययन

डा. सुनील कुमार
एसोसियेट प्रोफेसर
बी.एड विभाग,
डी.एस.एन. कालेज, उन्नाव

काशी नरेश सिंह
असिस्टेंट प्रोफेसर, बी.एड विभाग,
डॉ आर एम एल महाविद्यालय,
अवंतीपुरम-कल्याणपुर, कानपुर

सारांश
हमारी शिक्षा के गिरते हुये स्तर का एक बहुत बड़ा कारण हमारी व्यवस्था में सन्निहित है। उच्चतर कक्षाओं में मातृभाषा में शिक्षा न देने से स्थिति बहुत ही विषम हो गयी है। छात्रों में मौलिक विचारधारा का सर्वथा अभाव है। नवीन विचार मस्तिष्क में उठने नहीं पाते।

हम भौतिकवादिता में प्रवेश कर चुके है। विद्यार्थी समाज की महत्वपूर्ण इकाई के साथ ही उसकी नीवं भी होता है। वह समाज का महत्वपूर्ण अभिन्न अंग है। उसकी बुनियाद पर ही सामाजिक ढांचा निर्मित होता है। यह वह अवस्था होती है। जहाँ बालक के अंदर सामाजिक दृष्टिकोण के साथ ही आर्थिक एवं राजनैतिक आकांक्षायें प्रस्फुटित होने लगती है। इस अवस्था में छात्र समाज के लोगो की विभिन्न राजनैतिक गतिविधियों के प्रति जागरूक होने लगते है। उनका यही झुकाव राष्ट्रीय स्तर पर राजनैतिक परिवर्तन में अपनी भूमिका अदा करता है। निष्कर्षता यह कहा जा सकता है। कि राजनैतिक रुचियां उनके अध्ययन काल में विकसित होती है। तात्पर्य यह कि राजनैतिक मूल्यों का विकास विद्यार्थी जीवन में ही होता है अतः शिक्षा जगत का उत्तरदायित्व है कि इस प्रारंभिक अवस्था में ही छात्रों की राजनैतिक रुचियों एवं झुकाओ को जानकर उनको समुचित दिशा प्रदान करते हुये उनमें राजनैतिक जागरूकता उत्पन्न की जाए। उक्त शोध इसी संदर्भ में संदर्भित है।

मुख्य शब्द राजनैतिक रूचियाँ, विज्ञान के छात्र, वाणिज्य के छात्र

1.प्रस्तावना
भारतीय शिक्षा के अति प्राचीन काल में शिक्षा का अर्थ ''सा विद्या या विमुक्तये'' से लिया जाता था। जीवन के श्रेष्ठतर मूल्यों की स्थापना तथा बालक को जीने की वाणिज्य सिखाना शिक्षा का उद्देश्य था। बालक को वाणिज्यत्मक जीवन के ढाँचे में ढाल देना ही शिक्षा माना जाता था। यह शिक्षा वह अपनी मातृभाषा में ही प्राप्त करता था। भारत विश्वगुरू और सोने की चिड़िया के रूप में प्रतिष्ठित हो गया।

उच्च माध्यमिक कक्षाओं में विज्ञान एवं वाणिज्य वर्ग सदृश कुछ विषयों को छोड़कर शिक्षा के माध्यम के लिये क्षेत्रीय भाषाओं को संस्तुति की गयी। 1921 तक माध्यमिक कक्षाओं के माध्यम के लिये अंग्रेजी का प्रयोग किया जाता था किन्तु 1921 से 1937 के द्वैध शासन की अवधि में इसमें परिवर्तन हुआ और लगभग सभी स्कूलों में 1937 तक भारतीय भाषायें ही शिक्षा का माध्यम हो गयी थी। इस

प्रकार 1947 में स्वाधीन भारत में खेत्रीय भाषायें ही माध्यमिक विद्यालयों में शिक्षा का माध्यम थी। महात्मा गाँधी की वर्धा शिक्षा योजना में शिल्प आधारित शिक्षा का माध्यम मातृभाषा ही स्वीकार किया गया।भारतीय वाणिज्य एवं समृद्धि की ख्याति पश्चिमी देशों में भी पहुँची। यूरोपीय व्यापारियों ने भारत के साथ व्यापारिक सम्पर्क बढ़ाया। यूरोपीय व्यापारियों के साथ ईसाई पादरी भी भारत आये तथा अपने धर्म को प्रचार करने के लिये शिक्षा का सहारा लिया। इस प्रकार भारत में भारतीय संस्कृति से भिन्न एक नवीन संस्कृति का प्रादुर्भाव हुआ।

अतएव उच्च माध्यमिक स्तर छात्रों/छात्राओं की राजनीतिक रूचियों पर शैक्षिक परिवेश, प्रबन्धन, शैक्षिक संधारा क्षेत्रीय पृष्ठभमि आदि का प्रभाव पड़ना स्वाभाविक प्रतीत होता है। विज्ञान और वाणिज्य वर्ग दोनों ही प्रकार के उच्च माध्यमिक स्तर के छात्रों/छात्राओं के लिए वर्तमान संदर्भ में रूचियों का महत्व कम नहीं है। सरकारी सेवाओं में निरन्तर घटते अवसरों और बदलते समय की आवश्यकताओं के अनुरूप राजनैतिक रूचियों के अध्ययन पर ध्यान स्वतः ही जाता है।

2.साहित्यावलोकन

वर्तमान परिप्रेक्ष्य में विकराल रूप से बढ़ रही जनसंख्या तथा सरकारी क्षेत्र में न्यून होते सेवा के अवसरों के मध्य ऐसी स्थिति में उच्च माध्यमिक स्तर के छात्र/छात्राओं की राजनैतिक रूचियों पर ध्यान केन्द्रित करना परम आवश्यक प्रतीत होता है। भोजक व मेहता (1996), पाण्डेय (2018) आदि ने उच्च माध्यमिक स्तर के छात्रों की राजनैतिक रूचियों का अध्ययन उनके पाठ्यक्रम, स्थान, लिंग बौद्धिक स्तर पर सामाजिक, राजनैतिक आर्थिक स्तर के सन्दर्भ तथा दास (1991), जावेद (1990), पाण्डेय (2018) प्रतियोगी परीक्षाओं में पहले प्रयास में तो अंग्रेजी माध्यम के विद्यार्थियों को अधिक सफलता मिलती है किन्तु कुछ महीने की तैयारी के बाद हिन्दी माध्यम के विद्यार्थी अधिक सफल होते है (पाण्डेय, आभा 2002) आदि कतिपय शोधकर्ताओं ने उच्च माध्यमिक स्तर के छात्रों की राजनैतिक रूचियों का अध्ययन उनकी पृष्ठभूमि व शैक्षिक संधारा के परिप्रेक्ष्य में किया। उपर्युक्त विश्लेषण से स्पष्ट है कि वर्तमान दशक के उत्तरार्द्ध में अभिउचित स्व–वित्त पोषित विद्यालयों के परिप्रेक्ष्य में शोधकर्ताओं का ध्यान नहीं गया। कुछ शोधकर्ता विदेशी परिस्थिति अथवा अन्य राज्यों से सम्बद्ध है। उत्तर प्रदेश में इस अध्ययन से सम्बन्धित शोधकर्ता नगण्य ही है। उनका राष्ट्र के विकास में क्या योगदान है? इसी कारण ''उन्नाव जिले के विज्ञान एवं वाणिज्य वर्ग उच्च माध्यमिक स्तर के छात्र/छात्राओं की राजनैतिक रूचियों का समीक्षात्मक अध्ययन'' पर शोधकर्ता का ध्यान केन्द्रित हुआ है।

3.चर

राजनैतिक रूचियाँ, विज्ञान एवं वाणिज्य वर्ग के छात्र/छात्राओं।

4.अध्ययन के उद्देश्य

उन्नाव जिले के वाणिज्य वर्ग एवं विज्ञान वर्ग के उच्च माध्यमिक स्तर के छात्र/छात्राओं का राजनैतिक रूचियों का तुलनात्मक अध्ययन करना।

5.परिकल्पना

उन्नाव जिले के वाणिज्य वर्ग, विज्ञान वर्ग के उच्च माध्यमिक स्तर के छात्र/छात्राओं की राजनैतिक रूचियों में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है।

6.न्यादर्श

प्रस्तुत शोध पत्र में शोद्यार्थी ने सोद्देश्य न्यादर्श के द्वारा उन्नाव जिले के 200 विज्ञान वर्ग के

छात्र/छात्राओं एवं 200 वाणिज्य वर्ग के छात्र/छात्राओं का चयन किया गया है।

तालिका सं.1

क्र.सं.	लिंग	वाणिज्य वर्ग	विज्ञान वर्ग	योग
1	छात्र	100	100	200
2	छात्राएँ	100	100	200
	योग	200	200	400

7.परीक्षण

इस अध्ययन ने सुरेश कुमार सिंह लखनऊ, तथा वी0वी0 पाण्डेय गोरखपुर द्वारा निर्मित मानकीकृत परीक्षण का प्रयोग किया गया है। इसमें कुल 38 प्रश्न है और छात्र की रूचियों को जानने के लिए सम्भावित उत्तर है।

जैसे–अत्यधिक, अधिक सामान्य, कम सामान्य, बहुत कम अधिकतम अंक–190 है। इस उपकरण की विश्वस्नीयता को निर्धारित करने के लिए मापनी को माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों पर प्रशासित किया गया है।

8.प्रविधि

प्रस्तुत शोध पत्र में शोधार्थी ने सम्भाव प्रतिचयन की स्तरित याद्रच्छिक विधि कों अध्ययन के लिए चुना है।

9.विधि

प्रतिनिधि कार्य न्यादर्श में छात्र–छात्राओं की निर्मित मानकीकृत परीक्षण के प्रशासन एवं फलांकन के उपरान्त परिकल्पना के सत्यापन के लिए सांख्यिकी विधि का उपयोग करके परिणाम प्राप्त किये गये है।

तालिका सं. 2

समीक्षात्मक समूह	विद्यार्थियों की सं0		मध्यमान	मानक विचलन	क्रान्तिक अनुपात	पी–मान
	छात्र	छात्राएँ				
वाणिज्य वर्ग	200	200	144.29	12.97	3.08	<0.05
विज्ञान वर्ग	200	200	147.21	12.56		

स्वतन्त्रा के अंश–398
0.05 स्तर पर सार्थकता–1.97
0.01स्तर पर सार्थकता–2.59

उपरोक्त तालिका के अध्ययन से यह पता चला है कि विज्ञान एवं वाणिज्य वर्ग के छात्र–छात्राओं की राजनैतिक रूचियों में सार्थक अन्तर पाया गया है। अतः परिकल्पना अस्वीकृत होती है।

10.विवेचना

विज्ञान एवं वाणिज्य वर्ग के उच्च माध्यमिक स्तर के छात्र–छात्राओं की राजनैतिक रूचियों का क्रान्तिक मान–3.08 आया है। (सन्दर्भ तालिका क्रम–2) जो सार्थकता की न्यूनतम सारणीमान से अधिक है।

यह परिणाम यह प्रदर्शित कर रहे है कि उच्च माध्यमिक स्तर के वाणिज्य वर्ग एवं विज्ञान वर्ग के छात्र–छात्राओं की राजनैतिक रूचियों में अन्तर है।

11.निष्कर्ष

सांख्यिकीय गणना एवं परीक्षणों के आधार पर जो आंकड़े एकत्रित किये गये है। उनकी व्याख्या एवं विश्लेषण के आधार पर यह देखा गया है कि वाणिज्य वर्ग एवं विज्ञान वर्ग के विद्यार्थियों में राजनैतिक रूचियों उच्च स्तर की पायी गयी है। क्योंकि इनमें सार्थक अन्तर पाया गया है। यह भी देखा गया है कि वाणिज्य वर्ग के उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों में विज्ञान वर्ग की अपेक्षा राजनैतिक रूचियाँ अधिक पाया जाता है। लेकिन आज कल परिस्थितियों में यह पूरी तरह से परिवर्तन हुआ है। आज विज्ञान वर्ग के विद्यार्थी राजनैतिक गतिविधियों में भूमिका निभाते है और भारतीय राजनीति में रूचि रखते है जिससे उनमें भी राजनैतिक जागरूकता का विकास होता है। इस कारण से विद्यालयों में सांस्कृतिक कार्यक्रम पाठ्य संहगामी क्रियाओं का आयोजन किया जाना आवश्यक है। जिससे छात्र–छात्राओं में नेतृत्व का क्षमता का विकास हो सके। साथ ही सहयोग की भावना विकसित है। जिससे एक सुव्यवस्थित और अच्छे नागरिकता का विकास करके राष्ट्र के निर्माण में विद्यार्थी अपना महत्वपूर्ण सहयोग दे सके।

12.सुझाव

1.इस तरह का सर्वेक्षण अन्य संस्थानों जैसे सभी आई.आई.टी., आई.आइ.एम. आदि के विद्यार्थियों पर किया जा सकता है।
2.शहरी तथा ग्रामीण क्षेत्र के विद्यार्थियों के राजनैतिक रूचियों का अध्ययन किया जा सकता है।
3.संवर्ग एवं अनुसूचित जाति के विद्यार्थियों की राजनैतिक रूचियों का अध्ययन किया जा सकता है।
4.हिन्दी एवं अंग्रेजी माध्यम के विद्यार्थियों की राजनैतिक रूचियों का अध्ययन किया जा सकता है।
5.अन्य चरों जैसे आत्म सन्तोष, वैज्ञानिक एवं वाणिज्यत्मक अभिरूचि आदि का भी तुलनात्मक अध्ययन किया जा सकता है।
6.शिशु मन्दिरों एवं अंग्रेजी माध्यम के स्कूलों के विद्यार्थियों के राजनैतिक रूचियों का अध्ययन किया जा सकता है।
7.विवाहित एवं अविवाहित विद्यार्थियों का राजनैतिक रूचियों का अध्ययन किया जा सकता है।

सन्दर्भ

1. भवनेश्वर नारायण अग्रवाल (1982). राजनीतिक समाज शास्त्र किताब महल इलाहाबाद. पृ.सं. 117
2. चार्ल्स ई. मेरियम (1972). राजनीति के नये सन्दर्भ हिन्दी अकादमी, उ.प्र. पृ.सं. 121
3. शुक्ल, आ.पी. (2002). शिक्षा मनोविज्ञान : प्रथम संस्करण लखनऊ, भारत प्रकाशन।
4. पाण्डेय, के.पी., (1998). शैक्षिक अनुसंधान, वाराणसी, विश्वविद्यालय प्रकाशन, चौक।
5. मिश्र, डी.सी., (2002). शिक्षा शास्त्र भाग–1, तृतीय संस्करण, उन्नाव अनुसंधान प्रकाशन।
6. राय राम कुमार विक्रम संवत, 2021 असामान्य मनोविज्ञान, द्वितीय संस्करण, वाराणसी, चौखया विद्या भवन।
7. पाण्डेय, आभा (2002). शोध प्रपत्र भारतीय शिक्षा शोध पत्रिका 21 (2) पृ.सं. 40–44
8. निगम, आशा, (2003). शोध अध्ययन, अमर उजाला 21 नवम्बर, 2003, गणेश शंकर विद्यार्थी मेडिकल कालेज।

9. एनुवल रिपोर्ट (2012–2014). डिपार्टमेन्ट ऑफ स्कूल एजुकेशन एण्ड लिटरेसी, डिपार्टमेन्ट ऑफ एजुकेशन एन.एच.आर.की गवर्नमेन्ट ऑफ इण्डिया, नई दिल्ली।
10. बेस्ट जान डब्ल्यू एण्ड खान जैम्स का (2009). रिसर्च इन एजूकेशन पी.एच.आई. लर्निंग प्रा.लि. नई दिल्ली,
11. Al-Khatteeb J. (2002). Teacher Perceptions of the enclusive school concepts in Jordan Educational Journal 65, 19-39.
12. http://dn.doi.orgb/10.1111/5.15406237.2009.00617X accessed 25 June, 2014
13. Singh, N.P. (2008). Philosophical Foundation of Education, R Lal Book Depot, Meerut.